GYAN BHARTI COLLEGE OF EDUCATION

EPC-1

INDERGARH (KARNAL)

EPC-1 Reading and Reflecting on Text

पाठ पढ़ना और चिंतन करना

Submitted By

Name –

Class – B.Ed

Roll No. –

Session

Topic ______ Date ______

Sec. No.	Topic	Page No.	Teacher Sign/Remark
1.	पठन भाषा कौशल के रूप में	(5.)	
2.	पठन कौशल तथा अर्जन	(4.)	
3.	वैश्विक और स्थानीय समझ के लिए पठन	(6.)	
4.	आत्मिक पठन विकसित करने की तकनीक	(7.)	
5.	अध्ययन	(8.)	
6.	वार्तालाप	(10.)	
7	जीवनी रेखाचित्र	(13.)	
8.	कविताएं	(14.)	
9.	पत्र	(16.)	
10.	पट-कथाएं	(16.)	
11.	रिपोर्ट, समाचार रिपोर्ट	(17.)(18.)	
12.	ध्यानपूर्वक या गहन अध्ययन और पाठों पर चिंतन	(19.)	
13.	लेखन कौशलों का विकास	(22.)	
14.	व्याख्यान वाक्य रचना, आकृति विज्ञान, लेखन सम्मेलन के संदर्भ में लिखित पाठ को संपादित करना	(30.)	
15.	चिंतनशील लेखन, प्रश्न के बारे में पूछना	(32.)(34.)	
16.	पठन चिंतन एवं आलोचनात्मक रूप से सोचना	(35.)	
17	Jean Piaget का सिद्धान्त	(36.)	
18.	पाठ के प्रकार का ज्ञान शामिल	(37)	
19.	शब्द ज्ञान (20) सीखने और व्यक्तित्व	(38.)	
	अनुभव के माध्यम से प्राप्त सामग्री ज्ञान	(38.)	Suman

Lotus

Unit - 1.

Topic: भाषायी

Topic-1 (भाग-1)

पठन भाषा कौशल के रूप में

भाषा :— भाषा एक ऐसी योग्यता हैं विशेषकर मानवीय योग्यता जिसके द्वारा वह संचार की जटिल प्रणाली को ग्रहण कर उसका प्रयोग करता हैं।
भाषा एक ऐसा माध्यम हैं जिसके द्वारा हम अपने विचारों, संवेगों, भावनाओं और दृष्टिकोणों का आदान - प्रदान करते हैं। भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को भाषा विज्ञान (Linguistics) कहा जाता हैं किसी भी भाषा को सिखने के लिए उसकी चार मौलिक कौशलों पर महारत की आवश्यकता होती हैं।

भाषा के चार बुनियादी कौशल :— एक परिभाषा के अनुसार - "भाषा एक प्रतीकों की प्रणाली हैं जो लोगों को संवाद या अंतःक्रिया करने की अनुमति देती हैं। इन प्रतीकों में मौखिक और लिखित रूप, इशारे और शारीरिक भाषा भी शामिल हैं। भाषा को अलग तरीके से परिभाषित करने का भी एक अलग संदर्भ है, इसके चार मूलभूत भाषायी कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। अपने शिक्षण में आपको इन सब को सिखना होगा। लोग आमतौर पर इन चार कौशलों को निम्न क्रम में लिखते हैं :-

1. **श्रवण :—**
जब मनुष्य कोई नई भाषा सीखता हैं। तो पहले वह इसे सुनता हैं।

Topic _____ Date _____

2. कथन :-
श्रवण के नतीजन, वो जो कुछ सुनता उसे दोहराने की कोशिश करता है।

3. पठन :-
फिर वे लिखित प्रतीकों के माध्यम से बोली जाने वाली भाषा को देखते हैं।

4. लेखन :-
अंत में वे कागजों पर इन प्रतीकों को पुनः उत्पन्न करते हैं। चारों बुनियादी कौशल एक दूसरे से दो मापदंडों से संबंधित हैं। इस चार्ट के माध्यम से हम इन कौशलों के संबंधों को दर्शा सकते हैं।

	मौखिक	लिखित
ग्रहण	संग्राहक	पठन
कथन	उत्पादक	लेखन

भाषायी कौशलों का महत्व :-

भाषा आपके अधिगम की धुरी है इसके बिना आप किसी विषय को समझ कर संवाद नहीं कर सकते हैं। हमें अपनी भाषीय कौशलों को विकास के विकास की जरूरत है ताकि हम :-

* अपनी विषय सामग्री को समझ कर उसको प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर सके।
* अपने विषय से संबंधित विशिष्ट शब्दकोष और भाषा का विकास करें।
* प्रदत्त कार्य के लिए प्रसंगिक सवाल व सामग्री का चयन करना।
* साहित्यक चोरी के बिना प्रस्तुत असाइन मेंट्स को अच्छी व संरचित ढंग से लिखना।

Topic _____ Date _____

* अपने शिक्षक को अपनी जरूरतों से अवगत करना।
* दूसरे छात्रों के साथ रचनात्मक से कार्य करना।

श्रवण + कथन + पठन + लेखन

प्रवाह महता (fluency)

पठन कौशल :—

पठन लिखित रूप ग्रहण या सीखने संबंधी कौशल है। यह श्रवण और कथन कौशलों का भी विकास कर सकता है। लेकिन अक्सर यह एक अत्यधिक विकसित साहित्यिक परंपरा वाले समाज में। पठन शब्दकोष निर्माण में सहायक है जो बाद के चरणों में विशेषकर समझ के साथ सुनने में मदद करता है।

परम्परागत रूप से एक भाषा सीखने का उद्देश्य उस भाषा में लिखें साहित्य को समझना है। भाषा में अनुदेशन पठन सामग्री परम्परिक करके चुना गया है। यह उपागम ये मानती है। कि छात्र केवल भाषा को पढ़ने से ही नहीं बल्कि इसके शब्दकोष व्याकरण और वाक्य और वाक्य संरचना से सीखते हैं। निचले स्तर के अधिगम कर्ता लेखकों और शिक्षकों द्वारा बताए गए वाक्यों और पैराग्राफों को पढ़ते हैं। जबकि ऊपरी स्तर के अधिगमकर्ता अपनी आवश्यकता नुसार भाषायी कौशलों का विकास करते हैं।

भाषा - शिक्षण के संप्रेषणीय उपागम ने प्रशिक्षकों की भूमिका पठन कौशलों के द्वारा विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्रीयों को समझाने की कोशिश निर्धारित की है। जब अनुदेशन का उद्देश्य संप्रेषणीय क्षमता है। जैसे दैन अनुसूचियां अखबारों में लेख और पत्र व पर्यटन की

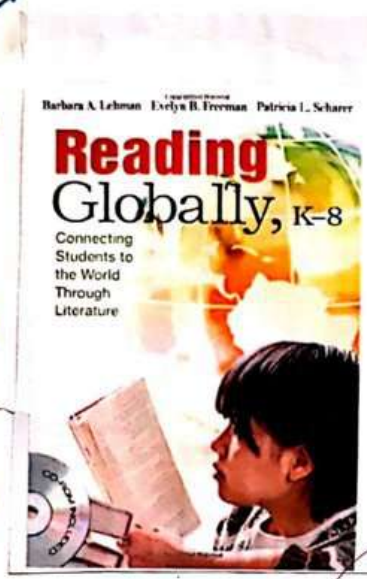

वेबसाइटों की सूची इत्यादि तब से ये कक्षा कक्षा सामग्री बन गई है। पढ़ने और पढ़ाने के अभ्यास में अनुदेशन इस प्रकार हर स्तर पर शिक्षण भाषा का आवश्यक अंग हो गया है। पठन एक उद्देश्य सहित गतिविधी है। एक व्यक्ति जानकारी हासिल करने या मौजूदा ज्ञान को स्थापित करने या किसी लेखक के विचारों या लेखन शैली की आलोचना करने के लिए पढ़ सकता है। एक व्यक्ति आनंद के लिए या पढ़ी जा रही भाषा के ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी पढ़ सकते हैं।

पाठकों की चयन कार्यों की मार्गदर्शिकों के उद्देश्य :—

पढ़ने के उद्देश्य पढ़ने की समझ के लिए उचित उपागम का निर्धारण करते हैं। एक व्यक्ति जो आंनद के लिए कविता पढ़ता है। इसके लिए जरूरी है कि वो जाने कि कवि ने किन शब्दों का प्रयोग किया है। और किन तरीकों से ये शब्द इकट्ठे प्रयुक्त हुए हैं। लेकिन उसे मुख्य विचार और अन्य सहायक विवरणों की आवश्यकता नहीं है। एक मत के समर्थन के लिए एक व्यक्ति वैज्ञानिक लेख कर प्रयोग का प्रयुक्त सामग्री शब्दावली तथ्यों की समझ कारण प्रभाव का क्रम तथा परिकल्पनाओं में प्रस्तुत विचारों और तथ्यों को समझते हैं।

(2) पठन कौशल तथा अर्जन :—

पढ़ने के लिए सीखना पठन के लिए आवश्यक कौशलों को अर्जित करना, मुद्रित प्रतीकों से अर्थ समझने की योग्यता। आमतौर पर पठन प्रक्रिया आरम्भ होने से पहले ही संज्ञानात्मक भाषाई और सामाजिक कौशल विकसित हो चुके होते हैं।

Topic _____ Date _____

एक बच्चे के पढ़ने की योग्यता पठन तत्परता कहलाती है। जो बचपन में शुरू होती है क्योंकि बालक अपने वातावरण से कथन संकेतों को समझकर बोलना शुरू कर देता है बच्चों को वे सभी सामग्री — धारणा संकल्पना और शब्द जो उसके सम्पर्क में आती है उनसे अनुक्रिया करनी होती है। इसलिए वातावरण बच्चे के सीखने को प्रभावित करता है एक बच्चा जितना समय अपने माता-पिता और देखभाल कर्ताओं के साथ बिताता है, उतना ही बाद में उसके पठन कौशल पर प्रभाव पड़ता है। एक बच्चा अपने देखभाल कर्ता के पास बैठा चित्रों को देखता है। कहानियां सुन रहा है, तब वह धीरे-2 उन संकेतों और शब्दों को पहचाना शुरू कर देता है।

पठन कौशल में सुधार लाने में सहायक तकनीकें :—

कुशल पठन के लिए जरूरी नहीं कि ध्वनिगत जागरूकता हो, लेकिन भाषण के अलग-2 भागों की जागरूकता अतिआवश्यक है निम्नलिखित कुछ तकनीकें अधिगमकर्ताओं की पठन कौशल सुधारने में उपयोगी हैं :—

(1.) **शब्दावली :—**

पठन की समझ का एक महत्वपूर्ण पहलु शब्दावली का विकास है जब पाठक एक अपरिचित लिखित शब्द को पढ़ता है और इसका उच्चारण करता है। तब वह इसे तभी समझेगा जब वह शब्द उसकी बोली जाने वाली शब्दावली में हो। अन्यथा पाठक इसे समझने का कई अन्य तरीका निकालेगा।

(2.) **पठन समझ :—**

पठन की समझ एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। इसमें पाठक जानबुझकर और सहभागिता पूर्ण विषयवस्तु से

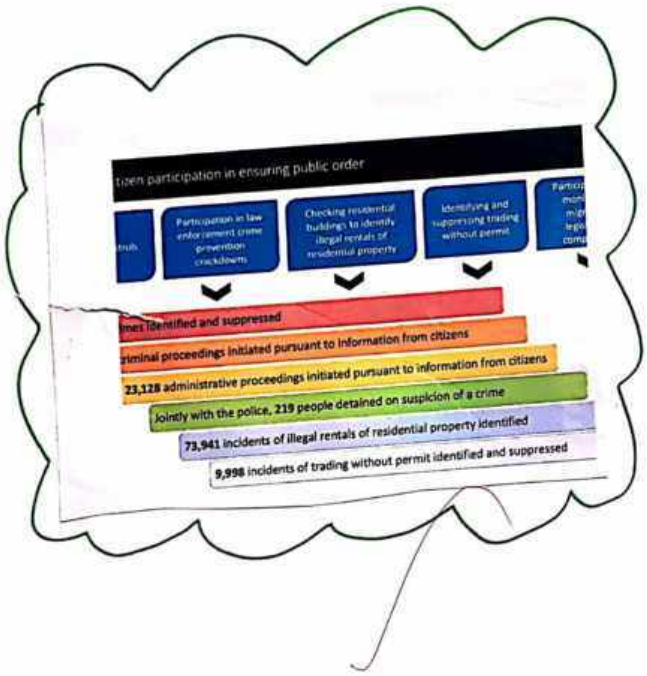

अनुक्रिया करता है। यह कुशल शब्द पहचान, डिकोडिंग मौखिक प्रठन प्रवाह, एक अच्छी विकसित शब्दावली और पाठ में सक्रिय सहभागिता पर काफी हद तक निर्भर है।

भाषा के प्रतीकों को जल्दी याद करना :— तेजी से और संगी को जल्दी से बोलने की योग्यता उसकी पठन योग्यता को निर्धारित करती है यह बच्चों की दीर्घकालिक स्मृति के लिए आवश्यक है।

लिखने का विकास :— वर्तनी भाषा में प्रयुक्त प्रतीकों का एक समूह है जिसमें इन प्रतीकों को लिखने के नियम भी शामिल है। कुशल पठन के लिए बच्चों को भाषा तत्वों जैसे बड़े अक्षर, शब्द विराम, जोर या बल और विराम चिह्नों इत्यादि को समझना आवश्यक है।

ड्रिल और अभ्यास :— ड्रिल और अभ्यास भाषा की किसी भी मूलभूत कौशल को समझने में सबसे प्रतिष्ठित कारकों में से एक मुद्रित शब्दों के बार-बार अभ्यास से पठन के कई पहलू विकसित होते हैं। यह शब्द पहचानने की गति को बढ़ा देता है जिससे पठन में लाभ आती है। यह वर्तनी विकास पठन की समझ व शब्दावली विकास में भी सहायक है।

प्रवाह :— यह मौखिक रूप से गति, सटीकता और मौखिक अभिव्यक्ति के साथ पढ़ने की क्षमता है। धारा प्रवाह पठन के लिए आवश्यक कारकों में से एक है।

(3) वैश्विक और स्थानीय समझ के लिए पठन :— वैश्विक समझ से हमारा अभिप्राय पाठ और पठन के सामान्य अर्थ को समझने से है। इसकी तुलना न्यायात्मक समझ से की जा सकती है जिसका

अर्थ पाठ में विशिष्ट सूचनाओं को समझना है। विस्तृत समझ जिसका अर्थ सब कुछ समझना है। वैश्विक चयनात्मक और विस्तृत समझ तीनों पठन कौशलों, स्कीमिंग, स्कैनिंग और गहन अध्ययन से समानताएं रखते हैं यह मुख्य तौर पर संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। स्थानीय समझ मुख्य तौर पर भाषा विज्ञान से संबंधित प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रणाली है जो पाठ में से सूचनाओं को निकालती है। जैसे शब्द पहचान और वाक्यात्मक डीकोडिंग इन अन्तःक्रियात्मक मॉडलों का उद्देश्य विभिन्न घटक कौशलों के बीच संबंधों के प्रसंस्करण से है।

विभिन्न प्रकार के पाठों ग्रन्थों को पढ़ना :—

कल्पनात्मक पाठ :— कल्पनात्मक पाठ का मुख्य उद्देश्य अधिगम कर्ता के मन में तस्वीर बनाना है। इसमें हमारी पांचों इंद्रियों का उपयोग शामिल है। छात्रों को कल्पनात्मक रूप से समझाना पढ़ाना उनकी पढ़ने के प्रति रुचि और सक्रियता को विकसित करता है।

कल्पनात्मक पठन के उद्देश्य :—

(i) यह अधिगमकर्ता को व्यक्ति, स्थान, वस्तुओं और घटनाओं को समझने में सहायक है।

(ii) यह छात्रों को विवरण सहित व अधिक रूचि से पढ़ने में सहायक सिद्ध होगा।

(iii) यह विद्यार्थियों को नए शब्दावली शब्दों के प्रयोग में प्रोत्साहित करता है।

(iv) यह छात्रों को नई विषय सामग्री की समझ को विकसित करता है।

Q4) **आत्मिक पठन विकसित करने की तकनीकें :—**

ध्यान :— यह तय करना अति महत्वपूर्ण है कि आपके विषय में क्या

होने जा रहा है। यह विषय या मुख्य विचार पर ध्यान रखने से पाठकों को रोकेगा।

शब्दों का प्रयोग :—

ज्यादातर मामलों में लेखक ज्यादा विस्तृत वर्णन के लिए विशेषणों का प्रयोग करता है। यह प्रक्रिया पाठक को अपने शब्द चयन के द्वारा एक मानसिक छवि बनाने में सहायक होगा।

पाठक की रुचि :— एक लेखक लिखते समय अपने शब्दों का प्रयोग करता है। यह पाठक के लिए अपने लेख से भावानात्मक रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

दुबारा पढ़ना :—

दुबारा पढ़ना वर्णात्मक पढ़ने में एक महत्वपूर्ण कदम है। हमेशा याद रखे की अच्छा वर्णात्मक लेखन तभी अच्छा होगा जब यह पाठकों की समझ में आ जाता है।

(1.) **आख्यान :—**

आख्यान शब्द लैटिन भाषा के Narrare से निकला है। जिसका अर्थ है 'बताना' एक आख्यान किसी घटनाक्रम से जुड़ी रिपोर्ट वास्तविक या काल्पनिक होती है। जो स्थिर या चलती छवियों या लिखित या मौखिक रूप से क्रमबद्ध होती है। यह कई वर्गों में विभाजित होती है। यह मनुष्य के रचनात्मक कला और मनोरंजन आदि रूपों में पाया जाता है। मौखिक कहानी सुनना इसका शायद प्राथमिक रूप है। ज्यादातर लोगों के बचपनों के दौरान आख्यान उन्हें उचित व्यवहार, सांस्कृतिक, इतिहास, सांप्रदायिक पहचान बनाने उचित मूल्यों के निर्माण में मार्गदर्शन करता है। प्रदर्शनी वाद-विवाद वर्णन प्रवचन के चार तरीकों में से एक है। अधिक सीमित तौर पर इसे एक ऐसे तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें लेखक पाठकों से

Topic________________ Date________

सीधे तौर पर सम्प्रेषण करता है। अध्यान पढ़ना काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता है इसके लिए आवश्यक है कि अध्यान के बारीकी से पढ़े अनापेक्षित विवरणों को ध्यान से देखें और सुने छीपि भावनाओं और अर्थों को ध्यान से समझें। अध्यान का पूर्ण अर्थ स्पष्ट नहीं हैं।

अध्यान पाठ अक्सर प्रतिभावली, रूपकों और प्रतिकों के माध्यम से कल्पनाशील भाषा का प्रयोग करके संवेगों को अभिव्यक्त कर कहानी सुनाता है छात्रों को जरूरत है कि वो जाने कि कैसे अध्यान पाठ काम करते है और उन्हें कैसे पढ़ा जा सकता है क्योंकि कहानियाँ कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होती है। अध्यान पाठ का उद्देश्य मनोरंजन करना, सीखना पाठक की रूचि बनाए रखना, हालांकि लेखकों की स्मृति और उपन्यासों अक्सर जटिल कहानियों से संबंधित होते है जो सार्वभौमिक विचारों घटनाओं और मुद्दो की जांच करते है। छात्र जब अध्यान पढ़ते है तब उन्हें अपनी इच्छा दूर करने और कथा ढांचे को समझने के लिए अध्यान के उद्देश्य और विधियां समझने की आवश्यकता है। जब छात्र कथा तत्वों को जानते है तब वे आसानी से कहानी का पालन करते है और कथा घटित होगा, इसका अंदाजा लगा सकते है। इसके अलावा इन तत्वों को समझना स्तरीय सोच कौशल विकसित करता है। अपने आप में अध्यान रूप अद्वितीय है क्योंकि लेखक विचारों को संबंधित करते है कि लोग क्या सोचते है और वे क्या विश्वास करते है। ये विचार विषय आमतौर पर सार्वभौमिक सत्य से संबंधित होते है और पाठक के अनुभवों से संबंध बनाते है।

अध्यान पढ़ने के उद्देश्य :- (1.) छात्रों को अपने वास्तविक अनुभवों के बारे में निजी वर्णन

लिखने में सक्षम बनाना।

(2.) छात्रों को छोटे-2 हिस्सों पर ध्यान केन्द्रित कर उनका कई पृष्ठों में वर्णन करने योग्य बनाना।

(3.) विद्यार्थियों को घटना की तस्वीर बनाने के लिए विवरण जोड़ने में कुशल बनाना।

(4.) छात्रों को अच्छी शुरुआत और चिंतनशील अंत लिखने को सक्षम करना।

(5.) छात्रों को दूसरे लेखकों की तकनीकों को अपने लेखन में उपयोग करने में पारंगत करना।

(6.) विद्यार्थियों को अपने परिश्रम से लिखने योग्य करना।

(7.) छात्रों को कहानियों का मसौदा तैयार करना, संशोधित, दोहराने और संपादित करने योग्य बनाना।

(8.) उन्हें लेखकों के प्रकाशित अध्यायों, और उनके शिल्प को जानने में सक्षम बनाना।

(9.) विद्यार्थियों को गहन अध्ययन लिखने की रणनीति विकसित करने में सक्षम करना।

(10.) छात्रों को प्रभावी अध्याय अंत लिखने में योग्य बनाना।

(2) वार्तालाप :— वार्तालाप

वार्तालाप दो या दो से अधिक लोगों के बीच अंतः क्रियात्मक सहज संचार का एक रूप है। आमतौर पर यह मौखिक सम्प्रेषण में घटित होता है क्योंकि लिखित आदान-प्रदान को आमतौर पर वार्तालाप नहीं कहा जा सकता है। वार्तालाप कौशल और शिष्टाचार का विकास समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक नई भाषा में वार्तालाप कौशलों का विकास इसके शिक्षण अधिगम में लगातार ध्यान बनाए रखता है वार्तालाप विश्लेषण समाजशास्त्र की वह शाखा है जो संवादी वार्तालाप पर ध्यान देते हुए मानवीय अन्तःक्रिया की संरचना और

संगठन का अध्ययन करता है।

वार्तालाप के लाभ / महत्व :— (1.) बेहतर समझ
(2.) बेहतर आत्मविश्वास
(3.) कार्यस्थल मूल्य
(4.) बेहतर आत्म देखभाल
(5.) बेहतर संबंध

वार्तालाप के उद्देश्य :— (1.) अधिक आसानी से शब्दों की अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए।
(2.) समस्याओं का ~~निवारण~~ व हल करने के लिए।
(3.) व्यक्तियों को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करने के लिए।
(4.) रुचि और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए।
(5.) शब्दावली समृद्ध करने के लिए।
(6.) बेहतर समझ के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए।
(7.) संदेशों को अच्छी तरह से अभिव्यक्ति करने के लिए।

वार्तालाप कौशलों को कैसे सुधारें :—

बातचीत एक महत्वपूर्ण कौशल है जिसमें कुछ लोग स्वाभाविक रूप से कुशल हैं। जबकि बाकी लोगों को इस पर मेहनत करने की जरूरत है। यहां पर कुछ विचारों और विधियों का वर्णन किया गया है जो अच्छी बातचीत से महत्वपूर्ण हैं।

(1.) **धीरे से बात करना :—** अच्छे वक्ता बातचीत में जल्दी नहीं करते जब वो किसी बात पर ध्यान लगाते हैं तो समय लेते हैं फिर अपनी बात जोर से कहते हैं। वे ऐसे दिखाते हैं कि दुनिया का पर्याय समय उनके पास है। इस तरह की बातचीत से आप प्रभाव छोड़ते हैं।

(2.) आँखों का संपर्क :—
आधिकतर लोग अपनी बातचीत के दो तिहाई समय एक-दूसरे से आँखों से देखकर बात करते हैं। यह एक अच्छा विचार है। यह बातचीत करने में आत्मविश्वास और रूचि बनाए रखता है।

(3.) विवरण पर ध्यान केन्द्रण :—
जो व्यक्ति बातचीत कौशल में अच्छे हैं वे उन बातों पर ध्यान देते हैं जिन पर दूसरे नहीं दे पाते और बातचीत में वे ऐसे विवरणों को शामिल करते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों को अच्छी तरह प्रभावित करते हैं।

(4.) तारीफ :— कोई व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा कर सकता है। यह बातचीत को प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

(5.) भावनाओं की अभिव्यक्ति :—
ऐसा व्यक्ति मिलना दुर्लभ है जो अजनबियों के साथ बातचीत में आराम से अपने संवेगों को अभिव्यक्ति करता है। बातचीत में भावनाओं को शामिल करना एक गुण है। यह बात में भावनाओं को शामिल करना एक गुण है यह बात याद रखनी चाहिए कि मनुष्य आपस में भावनात्मक रूप से ज्यादा जुड़ते हैं।

(6.) अंतर्दृष्टि :— कोई भी व्यक्ति खबरों के बारे में पढ़ सकता है या बुनियादी विचारों को व्यक्त कर सकता है। परंतु अच्छे बातचीत करने वाले आपको बता देंगे कि आप क्या जानते हैं और किस तरह आप आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए बातचीत के मनोविज्ञान या समाज शास्त्र का ज्ञान उचित अवसरों पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

(7.) स्टीक शब्दों का प्रयोग :—
सुचारू रूप से बातचीत करने

की योग्यता आपकी स्टीक भावनाओं और विचारों को स्टीक शब्दों का चुनाव करने व्यक्त करने में सहायक है। यह लगातार आपकी शब्दावली को विकसित कर आसानी से शब्दों को व्यक्त करने की योग्यता विकसित करती है।

(3) **जीवनी रेखाचित्र :—** जीवनी रेखाचित्र एक व्यक्ति के जीवन का विस्तृत वर्णन है। यह शिक्षा काम, संबंधों और मौत आदि तथ्यों से अधिक बातों को शामिल करता है। इसके साथ यह जीवन भर की घटनाओं के अनुभवों को दर्शाता है। यह एक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने वाली कहानी है। जिसमें उसकी घनिष्ठ अनुभव और व्यक्तित्व का विश्लेषण शामिल हो सकता है। यह अधिकृत जीवनी अनुमति, सहयोग से लिखी जाती है।

जीवनी रेखाचित्र पढ़ने के उद्देश्य :— (1.) एक व्यक्ति या एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए।

(2.) किसी भी उपलब्धियों और महान कार्यों की सूची बनाने के लिए।

(3.) जीवन के सबसे महत्वपूर्ण सबक प्रदान करने के लिए।

(4.) जीवन में संकट को संभालने के लिए अन्तर्दृष्टि रखने के लिए।

(5.) दूसरों के जीवन से प्रेरित होकर कैरियर का चुनाव करने के लिए।

(6.) यह पाठकों को दुनिया को नए तरीकों से देखने की अनुमति देता है।

(4) **नाटक :—** यह एक नाटक आमतौर पर पात्रों के बीच संवादों सहित नाटककार द्वारा रचित साहित्य का एक रूप है। जिसका इरादा केवल पढ़ने की बजाय नाटकीय प्रदर्शन

Topic _____ Date _____

दोनो से संबंधित है। नाटकीय साहित्य एक छात्र को कोई चुनौतियां प्रस्तुत करता है क्योंकि ये अनुभव कविता या कहानी पढ़ने से अलग है। यहां नाटक पढ़ने के कुछ सुझाव छात्रों को दिए गए हैं।

(1.) पेंसिल के साथ पढ़ना :— नाटक की रोचकता समझाने के लिए एडलर का मानना है कि पाठक को किसी जनरल या पेज के नोटस प्रतिक्रियाओं या प्रश्नों की संक्षेप में लिखना चाहिए। इससे विद्यार्थी पात्रों और नाटकों के दृश्यों को और अच्छी तरह से समझेंगे।

(2.) सेटिंग मनन :— कई काल्पनिक नाटक विभिन्न युगों की श्रृंखला में लिखे गए हैं। छात्रों को कहानी की समझ और जगह संबंधित समझ स्पष्ट की कल्पना करनी चाहिए। उन्हें विचार करना चाहिए कि ऐतिहासक संदर्भ कथनी के लिए महत्वपूर्ण है या नहीं।

(3.) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :— अगर समय और जगह एक महत्वपूर्ण घटक है तो छात्रों की नाटक के ऐतिहासिक विवरणों को पढ़ना चाहिए। ऐतिहासिक संदर्भ के ज्ञान बिना, कहानी की महत्ता गुम हो जाती है।

★ **नाटक पढ़ने के उद्देश्य :—** (1.) पाठक की शब्दावली समृद्ध करने के लिए।

(2.) खुशी और मनोरंजन के लिए।
(3.) पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए।
(4.) नाटक के मुख्य दर्शन को समझने के लिए।
(5.) मानसिक उत्तेजना प्रदान करने के लिए।
(6.) तनाव में कमी के लिए।
(7.) स्मृति बढ़ाने के लिए
(8.) ध्यान और एकाग्रता में सुधार के लिए।

★(5.) **कविताएँ :—** साहित्यक काम लोगों की सूचना मनोरंजन

और प्रेरणा देने के प्रयोजन से बनाए जाते है। ये हमारे पास प्राचीन समय से ही है। साहित्य के कई रूप रहे है। और कविता उनमें से एक है। कविता अर्थ उत्पन्न करने के लिए भाषा के सौंदर्य और लयबद्ध गुणों का उपयोग करती है। इसमें स्वरों की एकता, अनुप्रास, अर्थनिष्पन और लय आदि का प्रयोग होता है। अस्पष्टता, प्रतीकवाद बिडंबना भाषा इत्यादि कविता की अनेक व्याख्याएं बना देती है। इसी प्रकार अलंकार जैसे रूपक, उपमा मैटकीमी का प्रयोग कविता की शैली की सुदरता बढ़ाने के लिए किया जाता है। कुछ काव्य किसी विशेष संस्कृति से जुड़े होते है। आज के वैश्विक संसार में कवि अक्सर रूपों, शैलियों और विविध तकनीकों को अलग-2 भाषाओं और संस्कृतियों से अपना रहा है।

कविता पढ़ना :— अच्छी तरह कविता पढ़ना क्योंकि आंशिक रूप से दृष्टिकोण और आंशिक रूप से तकनीक पर निर्भर है। जिज्ञासा एक उपयोगी दृष्टिकोण है। खासकर जब यह कविता के बारे में पूर्वाग्रह विचारों से मुक्त हो। यह कविता पढ़ने के कुछ सुझाव दिए गए है।

(1.) **पेंसिल से पढ़ना :—** कविता पढ़ते समय पेंसिल साथ होना जरूरी है इसमें आपको महत्वपूर्ण बातों को सर्कल कर सकते है। अच्छे शब्दों या वाक्यों को चिन्हित कर सकते है। मुश्किल और भ्रामक शब्दों पर निशान लगा सकते है।

(2.) **मूल विषय की जांच :—** कविता के शीर्षक विषय और स्थिति पर ध्यान से विचार करने की आवश्यकता है।

(3.) **कविता के संदर्भ का ध्यान :—** कई कविताएं विभिन्न की गई है और छात्रों को विषय, जगह

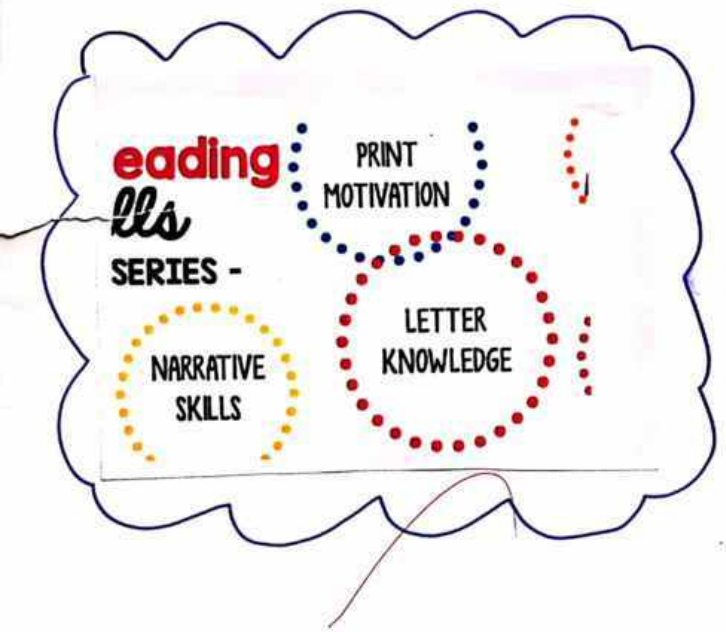

Topic ____ Date ____

और सबका की सबका स्पष्ट होनी चाहिए। उन्हें विभिन्न संदर्भों की समझना आवश्यक है।

(4.) **कविता के रूप का अध्ययन** :— पढ़ने वाले को कविता की ध्वनि वाले और कविता के अंदर के विभाजनों की जानकारी जरूरी है।

कविता पढ़न के उद्देश्य :— (1.) पाठक की कविता ठीक ढंग से पढ़ने में मदद करने के लिए।

(2.) पाठक को कविता में निहित विचारों की सुंदरता समझने के लिए।

(3.) पाठकों की कल्पनाशक्ति सुधारने के लिए।

(4.) उन्हें कविता के लय व संगीत का आनंद उठाने के लिए।

(5.) उन्हें कविता के सौंदर्य व गुणवत्ता —— ना करने के लिए।

(6.) **पत्र** :— पत्र किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को लिखित संदेश से सूचना देना है। पत्र दो दलों के बीच में संचार के संरक्षण की गारंटी देता है। वे मित्रों और रिश्तेदारों को करीब लाते हैं। व्यवसायिक संबंधों को समृद्ध करते हैं और आत्मअभिव्यक्ति के लिए एक संतोषजनक माध्यम भी प्रदान करते हैं।

पत्रों के लाभ :— ई-मेल के बावजूद पत्र अभी भी लोकप्रिय हैं। पत्रों की मेल पर उपयोगिता का वर्णन निम्नलिखित है। (1.) एक पत्र को प्राप्त करने के लिए किसी विशेषकर उपकरण की जरूरत नहीं होती है।

(2.) पत्र तत्काल, भौतिक व स्थायी संचार रिकॉर्ड रखता है।

(3.) ये संचार की ज्यादा बेहतर सबूतों की जानकारी रखते हैं।

(7.) **पटकथाएं** :— एक पटकथा एक फिल्म विडियो गेम या

टेलिविजन प्रोग्राम का लिखित रूप है ये पटकथाएं (असली) टेलिविजन प्रोग्राम्स कार्य भी हो सकते है या लेखन के मौजूदा कार्य का रूपातंरण भी हो सकता है। यह किसी फिल्म का ब्लूप्रिंट होता है। इसके घटक संवाद या अदाकारी है। संवाद वे लाइनें होती है। जो पात्र बोलते है।

पटकथा को पढ़ना :— एक पटकथा केवल पढ़ना नहीं दोबारा पढ़ना एक रचनात्मक कार्य है। यह पात्रों के भावनात्मक जीवन मे सक्रिय संलिप्ता है इसे अच्छी तरह से पढ़ने के लिए पात्रों की उनकी सुविधा दुनिया में देखना और सुनना और जो कुछ वे करते है उनकी तरह खुले दिमाग से सोचना। जब एक आदमी मन से संसार की कहानी पढ़ता है और वह उन पात्रों की तरह उसी भावनात्मक रूप से सोचने लग जाता है जिस तरह वे काम कर रहे है।

एक पटकथा पढ़ना अपने आप मे एक कला है :— रचनात्मक व प्रभावी ढंग से पढ़ने के लिए आपको जो कुछ कहानी मे भौतिक और भावनात्मक रूप से घटित हो रहा है उसको सुनना और देखना है। एक पटकथा को पढ़ने के लिए बड़े ध्यान की आवश्यकता होती है।

(8.) **रिपार्ट :—** रिपोर्ट एक सूचनात्मक कार्य है जो व्यापक रूप से सामने आने वाली कुछ घटनाओं के वर्णन करने के विशेष इरादे से बनाई गई है। रिपोर्ट अक्सर लेखन या भाषण में व्यक्त की जाती है। रिपोर्ट अक्सर लेखन को व्यक्त करती है। ये सूचनाओं का भंडार होती है। जिनका उपयोग निर्णय लेने में किया जाता है। लिखित रिपोर्ट के दस्तावेज है जो केन्द्रित मुख्य तत्व आवश्यकताओ को ध्यान में रखकर बनाए जाते है। ये सरकार शिक्षा, विज्ञान और दूसरे क्षेत्रों में अक्सर किसी प्रयोग, जांच या खोज के परिणामों को दर्शाने में प्रयुक्त की जाती है।

एक रिपोर्ट पढ़ते समय याद रखने योग्य बातें :— (1.) रिपोर्ट की संरचना।
(2.) लेखन शैली
(3.) संदर्भ सूची
(4.) निष्कर्ष पद्धति
(5.) अभिव्यक्ति
(6.) परिणाम।

रिपोर्ट पढ़ने के उद्देश्य :— (1.) पाठक को एक रिपोर्ट का सक्षम तार्किक और व्यवस्थित ढंग से विश्लेषण करने योग्य बनाने के लिए।
(2.) अच्छी समझ के लिए सामग्री को उचित शीर्षकों में विभाजित करना।
(3.) पाठकों को अपने निष्कर्षों में व्यक्त करने के बारे में।
(4.) उन्हें किसी पाठ के मुख्य बिंदुओं की सूची बनाने के लिए तैयार करना।

(9.) **समाचार रिपोर्ट :—** यह वर्तमान घटनाओं का रिकॉर्ड है। यह अलग-2 माध्यमों, मौखिक, लिखित प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक संचार द्वारा चलती है। मनुष्य दूसरे समाचारों से सीखने की सार्वभौमिक इच्छा दर्शाते हैं जो वे यात्रा करके और एक-दूसरे से बात करके संतुष्ट लाते हैं। तकनीकी और सामाजिक को प्रभावित किया है।

समाचार रिपोर्ट को पढ़ना :— समाचार रिपोर्ट पढ़ना एक अच्छी आदत है जो एक अच्छी शैक्षिक मूल्य प्रदान करती है। यह राजनीति अर्थव्यवस्था मनोरंजन खेल, व्यापार, उद्योग के बारे में जानकारी देती है।
(1.) यह दुनिया की खबर देती है। इसे पढ़कर आप देश ही नहीं बल्कि विदेशों की वर्तमान घटनाओं से अद्यतन होजाते हैं।
(2.) यह आपको अच्छी तरह सूचना प्रदान करता है।

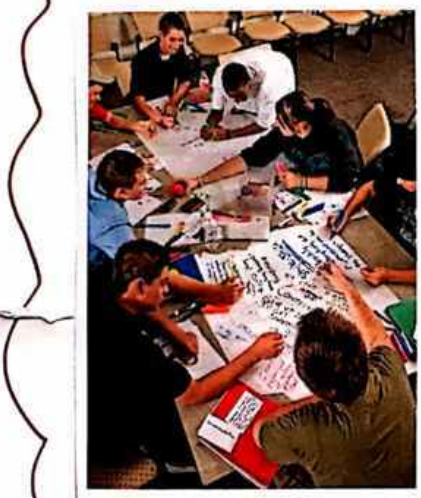

कक्षा

(5) ध्यानपूर्वक या गहन अध्ययन और पाठों पर चिंतन :—

पाठ्य सामग्री का चुनाव और पहचान: पाठ्यक्रम पाठ और उससे परे:- एक अच्छी तरह से डिजाइन पाठ मुख्य विचारों को संगठित करने मुख्य संकल्पना का वर्णन करने, मुख्य विवरण दर्शाने और जानकारी का समर्थन करने के लिए विभिन्न तरह के चित्रित और पाठ्यक्रम विशेषताओं को समझ जाते है तो पाठ को समझने और पाठ्य सामग्री पर ध्यान लगाने में कम ऊर्जा लगाते है। इस योजना के तहत छात्र पाठ की जाँच करने और विश्लेषण करने के लिए सामान्य से परे जाकर सीखने के लिए ये सुविधाएँ कैसे उपयोगी होगी। इस बात का निर्धारण करते हैं।

गहन अध्ययन और पाठ के चिंतन के उद्देश्य :— (1) छात्रों को कक्षा में प्रयुक्त पाठ की मुख्य विशेषताओं की जानकारी देना।
(2) उन्हें ज्यादा दक्षता से सूचना ढूंढने और उसके प्रयोग के योग्य बनाना।

समीक्षात्मक पठन की प्रक्रिया को समझना :—

समीक्षात्मक पठन :— यह एक विश्लेषणात्मक गतिविधि है। पाठक एक पाठ को तत्वों की जानकारी, मूल्यों, मान्यताओं और भाषा उपयोग को जानने के लिए बार-बार पढ़ता है।
समीक्षात्मक पठन आम विश्लेषण का एक रूप है जो पाठ की अंकित मूल्य को ग्रहण नहीं करता अपितु उसके गहन अर्थ को ध्यान में रखता है। दोबारा व्याख्या और संगठित करने की योग्यता और पठनीयता इसके महत्वपूर्ण घटक है। यह आलोचना लेखन की तरह है। जिसमें तर्कों की साक्ष्य अंकों से जोड़ने की आवश्यकता है। यह केवल सावधानी से चिंतन पठन नहीं है।

समीक्षात्मक पठन के उद्देश्य:— (1) छात्रों के लेखन का

उद्देश्य समझने योग्य बनाना।
2.) उन्हें अलग-2 पाठों को पढ़ने व अनुक्रिया करने योग्य बनाना।
3.) उन्हें पाठ की लय और प्रभावशाली तत्वों की जानकारी देना।

समीक्षात्मक पढ़ने की प्रक्रिया:—

(1.) **लेखकों के दर्शन बनने की तैयारी:—** ① लेखक विशेष दर्शकों के लिए पाठ तैयार करता है। लिखित दर्शक बनने से लेखक के उद्देश्य की जानकारी आसानी से हो जाती है। लेखक के बारे में खोजना, इतिहास बनाना, पाठ को समझकर नोट बनाना अति आवश्यक है।

(2.) **खुले मन से पढ़ने के लिए तैयार होना:—** समीक्षात्मक पाठक ज्ञान की खोज में रहते हैं। वे अपने व्यक्तित्व के अनुरूप कार्य को दोबारा नहीं लिखते। उनका मुख्य कार्य पेज को पढ़कर लेखक को अपने विचारों को विकसित करने, मनन के साथ पाठ पर विचार करने के अवसर देना।

(3.) **शीर्षक पर विचार करना:—** यह स्पष्ट तौर पर प्रतीत होता है कि एक शीर्षक लेखक के दृष्टिकोण लक्ष्य व्यक्तिगत सोच और उपागम को दर्शाता है।

(4.) **धीरे से पढ़ना:—** गहन अध्ययन का यह एक महत्वपूर्ण कारक है। कि जितना धीरे पढ़ोगे उतनी ही ज्यादा पाठ की समझ विकसित होगी।

(5.) **नोटस बनाना:—** पाठ के मुख्य बिंदुओं को रेखांकित, हाईलाईट करके नोटबुक में लिखना चाहिए। नोटस बनाना समीक्षात्मक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है।

पठन के तरीके:— पढ़ने से पहले और पढ़ने के बाद:— पढ़ना लिखित और ग्राफिक पाठ को समझने की सक्रिय प्रक्रिया है। यह एक सोचने की प्रक्रिया है प्रभावी पाठक जानते हैं कि उन्होंने क्या पढ़ा है।

Topic _____ Date _____

और उसका क्या अर्थ है और वे अपनी समझ का निरीक्षण रखते हैं जब वे पाठ्य सामग्री का अर्थ भूल जाते हैं तो दोबारा अर्थ जानने की योजना बनाते हैं।

पढ़ने से पहले :— पूर्व पठन का उद्देश्य ज्ञान की पृष्ठभूमि का निर्माण करना है। अध्यापक, जो कुछ छात्र किसी संप्रत्यय के बारे में जानते हैं और जो कुछ उन्हें सीखना है के बीच एक कड़ी का काम करता है। पूर्व पठन कार्य का उद्देश्य अधिगम कर्ताओं को सीखने की सामग्री का चयन करना है।

पूर्व पठन के उद्देश्य :— (1) छात्रों को अपने पूर्वज्ञान के आधार पर विषय के बारे में सोचने योग्य बनाना।
(2) उन्हें पाठ के संभावित अर्थ की कल्पना करने में सक्षम बनाना।
(3) उन्हें पाठ के संपूर्ण अर्थ को समझने योग्य बनाना।

पढ़ने के बाद :— ये कार्य पठन कार्य में अर्जित ज्ञान को विस्तृत करने के उद्देश्य से आयोजित किए जाते हैं। इसमें सीखने वाले प्रस्तुत पठन से संबंधित विषयों पर बहस कर उनका विश्लेषण करते हैं। इस गतिविधि में सीखने वाला पाठ पढ़ने के बाद चिंतन करता है।

पढ़ने के बाद के उद्देश्य :— (1) पाठकों को पाठ की सूचना और विचारों पर मनन करने योग्य बनाना।
(2) उन्हें अपने अनुभवों और ज्ञान को संबंधित करने योग्य बनाना।
(3) उन्हें पाठ की स्पष्ट समझ विकसित करने योग्य बनाना।
(4) उन्हें अपनी समझ में समीक्षात्मक व रचनात्मक रूप से विस्तृत करने योग्य बनाना।

Summ

Topic ______ Date ______

Unit-II

लेखन कौशलो का विकास :-

लेखन भाषा की महत्वपूर्ण कौशलो में से एक है। जो हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। लेखन के माध्यम से हम दूसरों को सूचित कर सकते है। लेन-देन कर सकते है। समझा सकते है। और जो कुछ हम महसूस करते है। उसे बता सकते है। चारों भाषाई कौशल सीखने में बहुत जटील है यह भाषा में अभिव्यक्ति का एक रूप है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लेखन हाथ से लिखना है। एक लेखक लिखित भाषा का प्रयोग करके एक विचार या संदेश देने के योग्य हो जाता है।

लेखन के मूल उद्देश्य :-

लेखन के सामान्य उद्देश्य वर्णन करना, सुनाना, समझाना और दर्शकों का मनोरंजन करना है। सभी भाषण इनमें से एक वर्ग में आएगें लेखन के चार उद्देश्य है। जिनका वर्णन इस प्रकार है :-

(1) कथन :- यह लेखन का सबसे आसान तरीका है। क्योंकि यह स्वाभाविक तौर पर आता है। हर कोई व्यक्ति कहानी कहना और सुनना पसंद करता है। ये आमतौर पर ऐतिहासिक होती है जिसकी शुरुआत मध्य और अंत होता है।

Topic ____________ Date ________

(2) **विवरण :—** यह तस्वीर को शब्दों सहित बताने की एक प्रक्रिया है जब हम शब्दों का प्रयोग करते हैं तो जो हम देखते हैं उससे ज्यादा उसका वर्णन करते हैं। ये वर्णन का विचार पाठक की कल्पना से मेल खाने लगता है।

(3) **प्रदर्शनी :—** यह लेखन का वह रूप है जो व्याख्या करता है या सूचित करता है। यह लेखन का व्यवहारिक रूप है इसमें समाचार रिपोर्ट, अनुदेश निर्देशन, सूचनाप्रद निबंध या शोध पत्र को शामिल किया जा सकता है।

(4.) **अनुनय :—** ये लेखन कार्य पाठक को किसी विशेष स्थिति को समझने के लिए प्रेरित करता है। प्रेरक लेखन कई मायनों से बहुत मुश्किल है क्योंकि इसे अच्छी तरह लिखने के लिए विषय या ज्ञान, तार्किक सोच और तकनीकी कौशल की आवश्यकता है।

लेखन प्रक्रिया :- कक्षा का अनुभव :-

तैयारी :- पहले छात्र पाठ पढ़ते हैं और फिर पता लगाते हैं कि वे क्या लिखना चाहते हैं। मस्तिष्क तूफान और कहानी के चरम बिंदु का पता लगा लगा रहे हैं इस तरह से वे तैयारी करते हैं।

संगठन :-

छात्रों के विचारों को संगठित करके अनेक क्रम में लगाना चाहिए जहाँ छात्र आपको विचार व्यक्त कर सके।

लेखन :— छात्रों के विचारों को क्रम सहित प्रतिलिपी के साथ लिखो।

संशोधन :— छात्रों की कहानी में विराम चिह्न, वर्तनी, व्याकरण आदि देखकर जाँच करो।

पुन लेखन :— संशोधन के बाद उनकी कहानी को दोबारा लिखो। यह final प्रतिलिपी है इसलिए इसे साफ तथा सुंदर बनाओ।

सहयोग :— छात्रों की कहानी किसी और के साथ साझा करे और देखो वे कैसे इसे पसंद करते है।

सहयोगी लेखन में दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा मिलकर एक लिखित दस्तावेज लिखना शामिल है। यह लेखन का महत्वपूर्ण घटक है। सहयोगात्मक लेखन टीमों के सहयोग पर निर्भर करता है। यह विभिन्न योजनाओं पर काम करने का एक अच्छा तरीका है। यह छात्रों को अपनी लेखन कौशल विकसित करने में मदद करता है। दूसरा यह वास्तविक लेखन है।

सामूहिक लेखन के लाभ :—

(i) सभी को लेखन में शामिल होने की बराबर भावना।

(ii) समूह में एक व्यक्ति अपना रोल अदा कर अधिक जिम्मेदारी के भाव दर्शाता है। क्योंकि सभी सदस्य एक ही समय और स्थान पर काम करते है।

(iii) प्रत्येक सदस्य दूसरों के कार्य की नकल किए बिना बराबर का योगदान दे सकते है।

(iv) यह कुछ ही बैठकों में किया जा सकता है। जब सभी सदस्यों के उपस्थित होने की आवश्यकता।

(v) कार्य शीघ्रता से पूरा किया जा सकता है क्योंकि सभी सदस्य एक ही समय में काम कर रहे हैं।

सामूहिक लेखन के नुकसान :-

(i) समूह में कड़ी मेहनत करने वालो को अन्य की अपेक्षा समान योगदान का मान मिलेगा।

(ii) कुछ सदस्यों को ऐसा लगता है कि वे अधिक सशक्त सदस्यों द्वारा दबाए जा रहे है।

(iii) वहाँ समय और स्थान का तालमेल बिठाना मुश्किल होता है।

(iv) वहां अधिक बड़े प्रोजेक्ट पर काम करने में अधिक समय लगता है।

सीखने की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में गलती को पहचानना :-

सीखने की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में गलती को स्वीकार करें :-

अर्ध लड़ाई का एहसास है कि त्रुटियों को सीखने के उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। दूसरा आधा उन्हें सही ढंग से उपयोग करने के लिए सीख रहा है। गलतियाँ हमारे लाभ में काम कर सकती है। कुछ छात्रों ने जोखिम, बनाने की त्रुटियों के बजाय याद रखने का मौका दिया, लेकिन अगर शिक्षा में छात्रों को अपने दम पर प्रयास करने का समय नहीं मिलता तो कुछ खो जाता है। बहुत से शिक्षक इस मॉडल से डर हो जाते हैं। क्योंकि गलतियों का मूल्यवान शिक्षण समय दूर होता है।

- स्वामित्व हासिल करना लक्ष्य होना चाहिए :-

पेशेवर अनिवार्य रूप से विशेषज्ञ हैं जो वर्षों के अध्ययन के बाद क्षेत्र में विशेषताओं को सीख चुके हैं लेकिन एक अवधारणा सीखने की प्रक्रिया उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी महत्वपूर्ण है अवधारणा के रूप में बस के रूप में महत्वपूर्ण है क्यों?

महारत सीखने का उत्पादन करती है। जो कि सार्थक है।

- **प्रौद्योगिकी सीखने योग्य क्षण में गलती को बदल सकती है :-**

अलग - अलग सोच दिखाने के लिए कुछ शिक्षक overhead या powerpoint पर छात्र उदाहरण का उपयोग करते है और छात्र एक समस्या के बारे में अलग तरीके से सकते है। वास्तव में वर्ग के दौरान गलतियों को दिखाना, छात्रों का यह महसूस करा सकते हैं कि वे सीखने की प्रक्रिया का एक स्वीकार्य हिस्सा है।

- **यादों का सहारा लेने के बजाय, छात्रों को कक्षा में अभ्यास करने की अनुमति दे :-**

वे पता लगा सकते है उनकी कमजोरियां किसी - विषय के करीब आने के अलग - अलग तरीके है। एक कमजोरी की बजाय, उनकी त्रुटियां को यह एहसास करने का तरीका हो सकता है कि वे सिर्फ चीजों को अलग तरीके से देख रहे है। वे एक अधिक सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा है। जो प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए व्यक्तिगत है।

- **निराशा को कम करने के लिए तत्काल प्रतिक्रिया का उपयोग करे :-**

बिल गेट्स ने बताया कि खान अकादमी सीखने की प्रक्रिया के "प्रेरणा और प्रतिक्रिया" पर निर्भर है। सीखने में गलतियों से तत्काल प्रतिक्रिया वास्तव में एक शक्तिशाली शिक्षण प्रेरक हो सकता है। शिक्षक एक संसाधन के

Topic ______ Date ______

महारत सीखने का उत्पादन करती है। जो कि सार्थक है।

प्रायोगिकी

• **प्रोद्योगिकी सीखने योग्य क्षण में गलती को बदल सकती है :-**

कुछ शिक्षक अलग - अलग सोच दिखाने के लिए overhead या powerpoint पर छात्र उदाहरण का उपयोग करते हैं और छात्र एक समस्या के बारे में अलग तरीके से सकते हैं। वास्तव में वर्ग के दौरान गलतियों को दिखाना, छात्रों को यह महसूस करा सकते हैं कि वे सीखने की प्रक्रिया का एक स्वीकार्य हिस्सा है।

• **यादों का सहारा लेने के बजाय, छात्रों को कक्षा में अभ्यास करने की अनुमति दें :-**

वे पता लगा सकते हैं। उनकी कमजोरियां किसी-विषय के करीब आने के अलग - अलग तरीके है। एक कमजोरी की बजाय, उनकी त्रुटियां को यह एहसास करने का तरीका हो सकता है कि वे सिर्फ चीजों को अलग तरीके से देख रहे हैं। वे एक अधिक सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा है। जो प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए व्यक्तिगत है।

• **निराशा को कम करने के लिए तत्काल प्रतिक्रिया का उपयोग करें :-**

बिल गेट्स ने बताया कि खान अकादमी सीखने की प्रक्रिया के "प्रेरणा और प्रतिक्रिया" पर निर्भर है। सीखने में गलतियों से तत्काल प्रतिक्रिया वास्तव में एक शक्तिशाली शिक्षण प्रेरक हो सकता है। शिक्षक एक संसाधन के

के रूप में सेवा कर सकता है जो विद्यार्थियों को अपने स्वंय के जवाब ढूंढने में मदद करता है।

व्याख्यान, वाक्य रचना, आकृति विज्ञान, लेखन सम्मेलन के संदर्भ में लिखित पाठ को संपादित करना :

- व्याख्यान अध्ययन :- व्याख्यान अध्ययन, लिखित, मुखर, या संकेत भाषा उपयोग, या किसी भी महत्वपूर्ण अर्धविरोधी घटना का विश्लेषण करने के लिए कई तरीकों के लिए एक सामान्य शब्द के व्याख्यान, विश्लेषण, भाषण वार्तालाप के सुसंगत अनुक्रम के रूप में परिभाषित होती है। पारंपरिक भाषाविज्ञान के विपरित व्याख्यान विश्लेषकों ने न केवल वाक्य सीमा से परे भाषा के इस्तेमाल का अध्ययन किया बल्कि उन स्वाभाविक रूप से होने वाली भाषा के उपयोग का विश्लेषण करना भी पंसद किया न कि अविकृत उदाहरण।

Topic ________ Date ________

आकृती विज्ञान :-

भाषा विज्ञान मे, आकरिकी एक ही भाषा में शब्दों का अध्ययन है, उनका गठन कैसे हुआ है और दूसरा शब्दों के साथ उनका संबंध एक ही भाषा में है। यह शब्दों की रचना और शब्दों के कुछ हिस्सों जैसे कि उपजी, मूल शब्द, उपसर्ग और प्रत्यय का विश्लेषण करती है। आकृति विज्ञान भाषण, स्वर और तनाव के कुछ हिस्सों पर भी दिखता है। और तरीकों का संबंध संदर्भ शब्द के उच्चारण को बदल सकता है। अर्थस्वरूप आकृति विज्ञान रूपात्मक टाइपोग्राफी से भिन्न होता है। जो शब्दों के उपयोग और शब्दावली के आधार पर भाषाओं का वर्गीकरण है जो कि शब्दों का अध्ययन और कैसे वे एक भाषा की शब्दावली बनाते है।

शिक्षण सम्मेलन :-

अलगाव शिक्षण सम्मेलन सर्वोत्कृष्ट में अप्रभावी है, क्योंकि छात्रों को अनेक लेखन में सम्मेलनों के ज्ञान को लागू करने के अवसरों की आवश्यकता होती है यहाँ तक कि दैनिक मौखिक भाषा की गतिविधियां बिना किसी प्रक्रिया के ज्ञान के छात्रों के लिए समय की बर्बादी है। लिखित रूप में सम्मेलनों का कैसे और कब उपयोग करें। नतीजतन सम्मेलनों को सिखाने का सबसे प्रभावी तरीका सीधे लेखन प्रक्रिया में बहुत जल्दी सम्मेलनों को ध्यान में रखते हुए, हालांकि, स्व चालितता के छात्रों छात्रों के विकास के साथ हस्तक्षेप कर सकता है। लेखकों को उनके बारे में सोच विचार के बिना पत्र संरचना, वर्तनी, शब्दक्रम, व्याकरण, शब्दावली और विचारों के लेखन के कई भौतिक और रचनात्मक पहलुओं को हथियाने की क्षमता की जरूरत है।

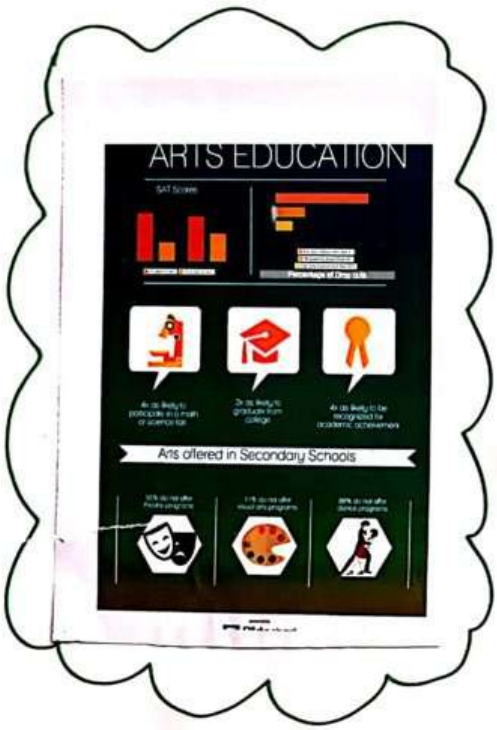

वाक्य रचना :- एक लेखक अपने दर्शकों के साथ संवाद करने के लिए शब्द का प्रयोग करता है। अपने अर्थ को व्यक्त करने के लिए सही शब्दों को चुनने के बाद, एक लेखक करने को इन शब्दों का व्यवस्थित रूप से अपने शब्द को व्यक्त करना चाहिए, या उसके कहने का क्या मतलब है शब्दों की यह व्यवस्था शब्दों के आदेश को वाक्य रचना करने के लिए कहने की जरूरत है, एक कलाकार पहले अपने रंगों का चयन करता है, फिर वह निर्णय लेता है कि उनका इस्तेमाल कब, कहां और कैसे करें।

चिंतनशील लेखन

अधिकांश लेखन रचनात्मक लेखन है, जहां आप किसी चीज का वर्णन करते हो या आप एक कहानी बनाते हो। चिंतनशील लेखन लेखक अंतदृष्टि देता है और आगे सीखने के लिए महत्व कर सकते हो यह आपके जीवन की एक सिद्धांली घटना में पुनर्विचार करने की तरह है और फिर सोचने के लिए कि आपके जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया गया हो, परिवार को बदलने के लिए आप क्या अलग तरीके से कर सकते थे, या घटना से बाहर क्या आया था। प्रतिबिंब एक मानसिक प्रक्रिया है यह चिंतन या लंबी विचार है जब आप प्रतिबिंता कर रहे हैं, विचार या विचार जो आपके पास आते हो उन्हें प्रतिबिंता कहा जाता हो एक दर्पण में एक प्रतिबिंता के विपरित, यह सीखने और सोच के बीच क्या हो रहा है कि व्याख्या के रूप में।

चिंतनशील लेखन के लिए निम्नलिखित मार्गदर्शन :-

- आप कहाँ पर प्रतिबिंबित करने जा रहे हैं और आप क्यों दर्शा रहे हैं?
- आप क्या सोचते हैं और महसूस करते हैं और आपकी प्रतिक्रियाएँ क्या थी?
- क्या अच्छा और बुरा था?
- वास्तव में क्या चल रहा था?
- आपके द्वारा किए गए सामान्य और विशिष्ट निष्कर्ष क्या हैं?

Summ

Topic _____ Date _____

प्रश्न के बारे में पूछने के लिए :-

- क्या शोधकर्ता वास्तव में एक असली कक्षा में इन प्रयासों का है। क्या शोध मूल है या क्या लेखक एक और अध्ययन की रिपोर्ट करता है?
- क्या आपकी स्थिती से संबंधित विचार है?
- आपके अपने पहले अनुभव और वर्तमान स्थिती को आपके विचारों का आकार कैसे मिला है?
- आप अपने विचारों को कैसे अपने अनुभव से जोड़ सकते है।

Topic ____ Date ____

पठन चिंतन एवम आलोचनात्मक रूप से सोचना :-

चिंतनशील अभ्यास एक बहुत अनुकूलनशील प्रक्रिया है। यह विचारों का एक सेट है जिसे प्रशिक्षण सीखने, व्यक्तिगत विचारों का विकास और आत्म-सुधार के लिए कई अन्य अवधारणाओं के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिस अत्यधिक प्रासंगिक और सतत, व्यावसायिक विकास (सीपीडी) के प्रति सहायक है। किचनर 1983 गंभीर स्व-प्रतिबिंब " माइकल फॉकल्ट 1992 क्रिटिकल रिफ्लेक्शन " द युकलिड से परे हो सकता है कि सीमा के एक परीक्षण को पहले से ही जाना जाता है कि क्या वैधता की बजाय, अलग तरीके से सोचने के लिए किस तरह से और किस प्रकार संभव हो सकता है।

शिक्षण दर्शन विकसित करने पर चिंतन के लाभों की पहचाने :-

यह पेशेवर शिक्षा और विकास से परे लाभ प्रदान करता है। उदाहरण के लिए !- मानव स्थिति कार्यस्थल रोमांस, पेरेंटिंग आदि पुनर्वास सामाधान मध्यस्थता तक सीमित है। सीमित नहीं है।

- तनाव कमी और प्रबंधन
  शिक्षण, प्रशिक्षण, परामर्श के सभी प्रकार आदि।

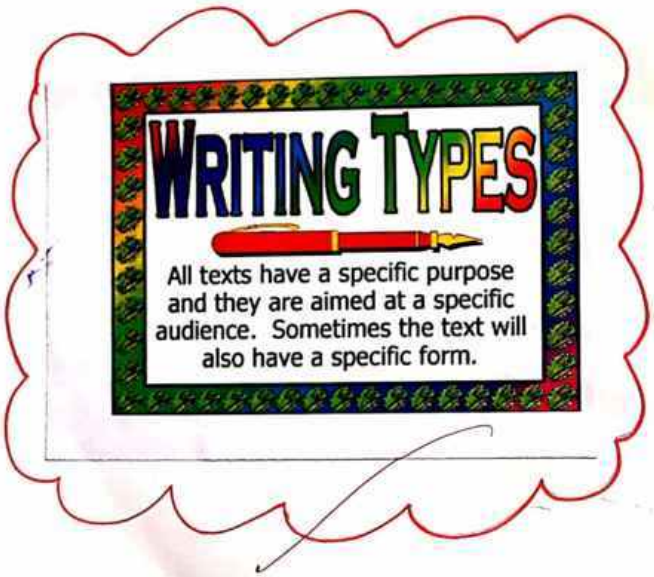

पाठ के प्रकार का ज्ञान शामिल करें :

नवविधान के पाठ प्रकारों के लिए, नवविधान पांडुलिपि के वर्ग देखें, पाठ प्रकार निम्नलिखित चार मूल पहलुओं को लिखते हैं: वर्णनात्मक, कथा, प्रदर्शनी और तर्कसंगत।

पाठ के प्रकार का ज्ञान शामिल करने की संरचना :

पाठ संरचना पृष्ठभूमि

पाठ संरचना यह दर्शाती है कि कैसे एक लिखित पाठ के भीतर की जानकारी का आयोजन किया जाता है। यह रणनीति छात्रों को यह समझाने में सहायता करती है। कि कोई पाठ एक मुख्य विचार और विवरण प्रस्तुत कर सकता है, एक कारण और उसके प्रभाव, और / या एक विषय के विभिन्न विचार अन्य पाठ संरचनाओं को पहचानने के लिए छात्रों को पढ़ाने से छात्रों को उनकी समझ की मॉनिटर करने में मदद मिल सकती है।

भाषाई विशेषताएँ :

भाषा सुविधाओं व्याकरण और लिखित रूपों की सुविधाओं के बारे में उनका ज्ञान। लिखित रूपों के लिखित रूप में पाठ की लंबाई, पाठ के विभिन्न भागों और संगठनात्मक उपकरण जैसे अनुच्छेदों की अनुक्रम भागों को लिंक

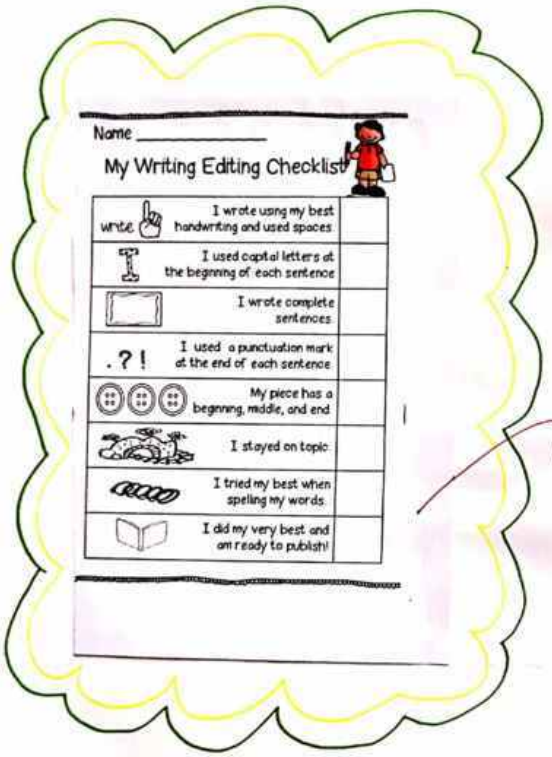

Name ____________

My Writing Editing Checklist

write	I wrote using my best handwriting and used spaces
	I used capital letters at the beginning of each sentence
	I wrote complete sentences
.?!	I used a punctuation mark at the end of each sentence
	My piece has a beginning, middle, and end
	I stayed on topic
	I tried my best when spelling my words
	I did my very best and am ready to publish!

करने के लिए शामिल है। विभिन्न लिखित पाठ प्रकारों में अलग-अलग विशेषताएं होती है। अन्य पाठ सुविधाओं में लेखकों को उपयोग करने में सक्षम होने की आवश्यकता हो सकती है। जिसमें दृश्य भाषा की विशेषताओं जैसे टेबल चार्ट, नक्शे, चित्र और फोटोग्राफ शामिल है। लिखित ग्रंथों की सुविधाओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें अधिकांश लेखकों में सक्षम होंगे; क्रियाकलाप बच्चों को लिखित शब्दों और वाक्य और उद्देश्यों के साथ परिचित होने की आवश्यकता है।

शब्द ज्ञान :-

शब्द ज्ञान शब्दावली के किसी विशेष व्यक्ति द्वारा ज्ञात और इस्तेमाल किए जाने वाले सभी शब्दों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। फिर भी, किसी शब्द को जानने वाला व्यक्ति इसका अर्थ नहीं करता कि वह शब्द को समझने में या उचित तरीके से उपयोग करने में सक्षम होगा, इसका कारण यह है कि शब्द ज्ञान की कई विशेषताएं जो बारीकी से शब्द ज्ञान का आकलन करने के लिए उपयोग की जाती है। शब्द ज्ञान दो प्रकार का उत्पादक हो सकता है। उत्पादक या प्राप्त करना और ग्रहणशील या पाना।

सीखने और व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से प्राप्त सामग्ती ज्ञान :-

सामग्री ज्ञान आमतौर पर तथ्यों अवधारणाओं सिद्धांतों और सिद्धांतों को संदर्भित

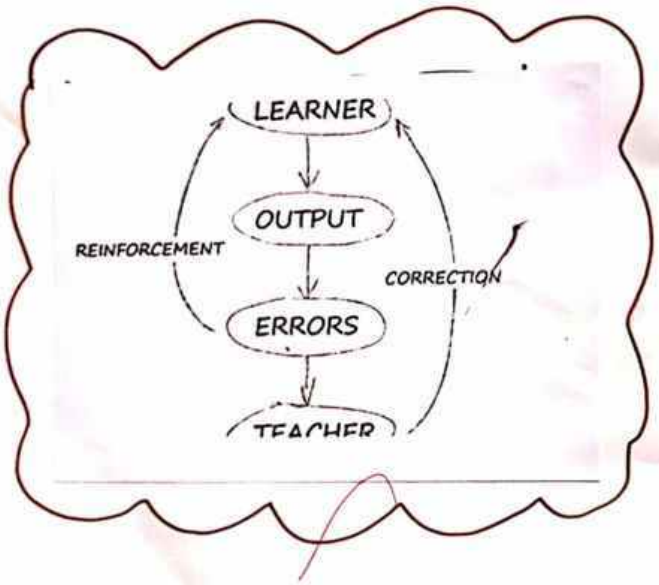

करता है जो पढ़ने, लेखन या शोध जैसी संबंधित कौशल की बजाय, विशेष शैक्षिक पाठ्यक्रमों में सिखाया जाता है और सीखना है जो छात्र स्कूल में भी सीखते हैं हालांकि इस शब्द को कुछ के द्वारा अनावश्यक शब्दजाल माना जा सकता है। हाल के दशकों में "सामग्री ज्ञान" का उपयोग काफी बड़े पैमाने पर हो चुका है क्योंकि शिक्षक का शब्दजाल' शब्द "ज्ञान" के बीच एक उपयोगी महत्वपूर्ण भेद को स्पष्ट करने के लिए एक संक्षिप्त रूप के रूप में उपयोग करते हैं।

हाल के दशकों में सार्वजनिक, विद्यालय के शिक्षकों की आवश्यकता है, अधिकतर मामलों में, वे जो विषय क्षेत्र में पढ़ाते हैं प्रमाणन प्राप्त करने के लिए, चार साल की कॉलेज की डिग्री से परे शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है बहुत से शिक्षकों, रसायन विज्ञान या भौतिकी जैसी किसी मास्टर डिग्री की कमाई होती है।